NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

भारतीय कृषि में आने वाली समस्याएँ और उनके समाधान के लिये सम्भावित उपाय

मोनिका कुमावत कृषि स्नातकोत्तर छात्रा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

भारतीय किसानों को कई मुख्य कृषि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं का समाधान निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है:

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन द्वारा समस्या के समाधान के लिए जल बचाव, वर्षा सम्पादन, जल संरचनाएं, जल संचयन, जल विनियाम, इत्यादि पर ध्यान देना चाहिए। भूमि सुधार और जलवायु परिवर्तन के लिए अनुसंधान विकास को बढ़ावा देना चाहिए।

कृषि तकनीकीकरण: किसानों को उन्नत खेती तकनीकों के साथ अवगत करना चाहिए। उन्नत कृषि उपकरण, जैविक खेती, सिंचाई प्रणाली, बीजों का सुधार, कृषि रोबोटिक्स, आदि के अनुसंधान और प्रोत्साहन के लिए सरकारी सहायता उपलब्ध करानी चाहिए।

भूमि संसाधन व्यवस्थापन: जमीन के उपयोग, संरक्षण, और व्यवस्थापन पर ध्यान देना चाहिए। भूमि के उचित उपयोग के माध्यम से भूमि की खेती में उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

बाजार विकास: बाजारों में सुधार के माध्यम से किसानों को उचित मूल्य मिलना चाहिए। उन्हें स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच को बढ़ावा देना चाहिए।

करनी चाहिए। बैंकों और सरकारी योजनाओं के माध्यम से विशेषकर किसानों को ऋण और बीमा उपलब्ध कराने की जानकारी पहुंचानी चाहिए।

शिक्षा और प्रशिक्षण: किसानों को खेती से सम्बंधित नवीनतम ज्ञान और प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। सरकार और गैर सरकारी संगठनों द्वारा समर्थन कार्यक्रम आयोजित करने से किसानों की ज्ञान विस्तार और प्रौद्योगिकीकरण में सुधार होगा।

किसानों के दायित्वों का बढ़ावा: सरकार को किसानों के दायित्वों को समझने और उन्हें समर्थन प्रदान करने के लिए उनके बेहतर विकास के लिए नीतियों को सुधारने की जरूरत है।

जल संकट: भारत में किसानों को जल संबंधी समस्याएं बहुत होती हैं, जैसे कि आवश्यक जल की कमी, अविशेषित बारिश और जल संरक्षण की कमी।

मोनिका कुमावत
कृषि स्नातकोत्तर छात्रा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

समाधान: जल संबंधी समस्याओं का समाधान निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है:

- जल संरक्षण और उपयोग के लिए प्रभावी तकनीकों का उपयोग करना।
- बांध निर्माण, तालाबों का उत्थान, और जल संचयन की पहचान करना।
- बूंद बूंद जल संचयन तंत्र का उपयोग करके खेतों में ऑटोमेटिक आधार पर पानी प्रबंधन को सुनिश्चित करना।

भूमि उपजाऊ न होना और जमीन की उपयुक्त खेती के अभाव: कुछ क्षेत्रों में मिट्टी का पुनर्नवीकरण न होने और अनुचित खेती के कारण उत्पादकता कम होती है।

समाधान: भूमि समस्याओं का समाधान निम्नलिखित तरीकों से किया जा सकता है:

- स्वच्छता अभियान के माध्यम से मिट्टी के पुनर्नवीकरण को प्रोत्साहित करना।
- अधिक उत्पादक ज़मीन की उपजाऊ खेती के लिए उचित खेती तकनीकों का प्रयोग करना।
- जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीकों में सुधार करके पानी का उपयोग कम करना।

बिजली की कमी: बिजली की अनिश्चितता के कारण किसान इर्रिगेशन और कृषि उपकरणों में परेशानियों का सामना करते हैं।

समाधान: बिजली की समस्या को हल करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और बायो ऊर्जा जैसी नई ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना।
- छोटे-छोटे बिजली संयंत्रों का निर्माण करना, जो गांव के किसानों को बिजली की आपूर्ति के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।
- ऊर्जा बचत के लिए उत्पादन और उपयोग की तकनीकों में सुधार करना।

भारतीय किसानों का जीवन सुधारने के अन्य उपाय

किसानों की मॉग मुफ्त बिजली और पानी नहीं है, बल्कि बिजली की निर्बाध आपूर्ति के लिए हैं जिसके लिये वे भुगतान करने के लिए तैयार है। पंजाब जैसे राज्यों में, पहली बार में हरित क्रांति से किसानों को बहुत मदद मिली लेकिन कम कीमतों मैं बम्पर फसलों की उपज के कारण उनके काम में बधाओ ने आना शुरु कर दिया। भारतीय किसानों की हालत में सुधार किया जाना चाहिए। उन्हे खेती की आधुनिक विधि सिखाया जाना चाहिए। उन्हे साक्षर बनाया जाना चाहिए। उनको पढा लिखा बनाना चाहिए। वह हर संभव तरीके में सरकार द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए। छोटे किसानों ने भी कुछ कुटीर उद्योग शुरू करने का निर्णय ले लिया। फसल चक्र प्रणाली और अनुबंध फसल प्रणाली कुछ राज्यों में शुरू कर दिया गया। इस तरह के कदम किसानो को सही दिशा में ले जाते और लंबे समय तक किसानी करने में मदद करते। भारत का कल्याण किसानो पर ही निर्भर करता है।